मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 8

MTT-045

सिंधी-हिंदी-सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी.जी.डी.एस.एच.एस.टी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2023

एम.टी.टी.-045 : हिंदी-सिंधी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. निम्नलिखित में से किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 20

(क) हिंदी से सिंधी काव्यानुवाद की चुनौतियों का उल्लेख करते हुए, प्राचीन, मध्यकालीन एवं आधुनिक हिंदी कविता के सिंधी अनुवाद का उदाहरण और विश्लेषण प्रस्तुत कीजिए।

अथवा

(ख) सूचनाओं और विवरणों के अनुवाद की आवश्यकता को समझाते हुए बताइए कि इनका हिंदी से सिंधी अनुवाद करते समय कौन-सी सावधानियाँ बरतना जरूरी है।

2. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखते हुए उनका हिदी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

निवेश, स्थगित, स्वीकृति, भव्य, प्रतिध्वनि

आर्थिक, प्रतिबंध, खिलाड़ी, तत्काल, पृष्ठभूमि

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **पाँच** सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखते हुए उनका सिंधी में वाक्य प्रयोग कीजिए : 10

डोकड़, सीरत, वाधायूं, इतिफाको, साराहजोगो,

अंगअखर, घुर, ओसरि, इदारो, सबबु

4. नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनमें से किन्हीं **पाँच** का हिंदी और सिंधी में अर्थ बताते हुए हिंदी और सिंधी के वाक्यों में अलग-अलग प्रयोग कीजिए : 15

हिंदी शब्द	**सिंधी शब्द**
अर्थहीन	बुनियादु
सावधानी	शख्सियत
पद	निमाउ
सहमति	रहनुमाई
जाँच-पड़ताल	अजायो

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** अनुच्छेदों का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 15×2=30

(क) मेरे प्यारे देशवासियों, नमस्कार। अगस्त के इस महीने में, आप सभी के पत्रों, संदेशों और कार्ड ने मेरे कार्यालय को तिरंगामय कर दिया है। मुझे ऐसा शायद ही कोई पत्र मिला हो, जिस पर तिरंगा न हो, या तिरंगे और आजादी से जुड़ी बात न हो। बच्चों ने, युवा साथियों ने तो अमृत महोत्सव पर खूब सुंदर-सुंदर चित्र और कलाकारी भी बनाकर भेजी है। आजादी के इस महीने में हमारे पूरे देश में, हर शहर, हर गाँव में, अमृत महोत्सव की अमृतधारा बह रही है। अमृत महोत्सव और स्वतंत्रता दिवस के इस विशेष अवसर पर हमने देश की सामूहिक शक्ति के दर्शन किए हैं। एक चेतना की अनुभूति हुई है। इतना बड़ा देश, इतनी विविधताएँ, लेकिन जब बात तिरंगा फहराने की आई, तो हर कोई, एक ही भावना में बहता दिखाई दिया। तिरंगे के गौरव के प्रथम प्रहरी बनकर, लोग, खुद आगे आए। हमने स्वच्छता अभियान और वैक्सीनेशन अभियान में भी देश के उत्साह को देखा था। अमृत महोत्सव में हमें फिर देशभक्ति का वैसा ही जज्बा देखने को मिल रहा है। हमारे सैनिकों ने ऊँची-ऊँची पहाड़ की चोटियों पर, देश की सीमाओं पर, और बीच समंदर में तिरंगा फहराया।

(ख) हिमाचल प्रदेश के धर्मशाला में राज्यों के पर्यटन मंत्रियों का तीन दिवसीय सम्मेलन आज एक प्रेस-वार्ता के साथ आरंभ हुआ, जिसकी अध्यक्षता श्री जी. किशन रेड्डी ने की। राज्यों के पर्यटन मंत्रियों के राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्देश्य है पर्यटन विकास और उन्नति पर सभी राज्यों तथा केन्द्र शासित प्रदेशों के विविध नजरियों और परिप्रेक्ष्यों को जानना उनके साथ योजनाओं व नीतियों पर सीधे संवाद करना तथा भारत में समग्र पर्यटन विकास में राष्ट्रीय स्तर पर पहल करना भी इसमें शामिल है। प्रेस-वार्ता के दौरान पर्यटन और उत्तर पूर्वी क्षेत्र विकास मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी ने कहा कि पिछले 75 वर्षों में भारत पर्यटन, आध्यात्मिकता, परिवर्तन, संस्कृति और विविधता का पर्याय बन चुका है। प्रधानमंत्री द्वारा दिये गये ध्येय-वाक्य विकास भी विरासत भी को रेखांकित करते हुए उन्होंने भारतीय समुदाय से आग्रह किया कि विदेश में रहने वाला प्रत्येक भारतीय हमारे प्रधानमंत्री की परिकल्पना के अनुरूप कम से कम पाँच विदेशियों को भारत आने के लिये प्रेरित करे। उन्होंने कहा कि कोविड-19 का सबसे ज्यादा नुकसान पर्यटन सेक्टर को उठाना

पड़ा था, इसलिये उसे दी जाने वाली वित्तीय सहायता को 31 मार्च, 2023 तक बढ़ा दिया गया है।

(ग) पिछले बरस की बात है। मार्च के उस दिन मूसलाधार बारिश के साथ ओले भी पड़े थे काफी देर तक। मैं पहली मंजिल के अपने घर की खिड़की से ओलावृष्टि का आनंद लती रही। बाहर मैदान में सफेदी की चादर बिछ गई थी। दिल्ली जैसे शहर में इतनी देर तक बर्फ के इन खिलौनों से खेल पाना किसी मन्नत के पूरे होने जैसा है। इन सुंदर दृश्यों को मोबाइल के कैमरे में क्लिक करते समय मुझे अचानक ध्यान आया कि खेतों में कटाई के लिए तैयार फसलें खड़ी होंगी, जो इस ओलावृष्टि में शायद नष्ट हो गई होंगी। मैंने रस्मी तौर पर अफसोस जताया और फिर से तस्वीरें लेने में व्यस्त हो गई।

अगली सुबह रोजाना की तरह छत पर जाने पर देखा कि गमले में लगे नींबू के पेड़ में जो आठ–दस नींबू लगे हुए थे, वे सभी धराशायी हो चुके थे। बहुत सारे फूल डालियों से बिछुड़ गए

थे और कुछ नाजुक पौधे उन सख्त थपेड़ों को न सह पाने के कारण दम तोड़ रहे थे। इतने जतन से सजाई-सँवारी बगिया का यह दृश्र देखकर मुझे रोना आ गया। मेरा माली पंद्रह दिन की छुट्टी लेकर अपने गाँव गया था। आमतौर पर उसक छुट्टी करने पर उसका साथी आया करता था। मैंने सोचा कि वह आकर संभाल लेगा, लेकिन न जाने क्यों वह भी नहीं आया। और इस तरह बिखरी बगिया को ठीक करने की जिम्मेदारी मेरे ऊपर आ गई।

यह जिम्मेदारी निभाते हुए मैंने महसूस किया कि घर में पौधों का होना और उन पौधों की अपने हाथों से देखभाल करना दो अलग-अलग बातें हैं। हरे-भरे पौधों और इंद्रधनुषी फूलों को देखना आँखों के लिए एक सुंदर चित्र की तरह है। लेकिन उन पौधों के लिए मिट्टी तैयार करने, बीज बोने और पौधों को बढ़ते देखने में जो तृप्ति और सुकून है, उसका कोई मोल नहीं।

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 15

(क) जिनि वटि दिलि में दर्दु, उन्हनि जे दर्दनि तां कुर्बान,
जिनि वटि सभ जा सूर, उन्हनि जे सूरनि तां कुर्बानु।
कंडनि में थिया पाण सदाईं,
डोंदा त बि सुरहाण सदाईं,
जिनि कंडनि सां कुर्ब कयो, तिनि गुलड़नि तां कुर्बानु।
पाण उसनि में सड़ंदा आहिनि,
छांव थधी त बि डोंदा आहिनि,
छा न वणनि जा वड़, मां तिनि जे पन पन तां कुर्बानु।
निति निति पाण जलाईनि वेठा,
जग में जोति जगाईनि वेठा,
ऊंदहि उजली तिनि खां थिए, तिनि दीपनि तां कुर्बानु।
जिनि खे डिसंदे मुखु मुखु बहिके,
मन मन जी मैना थी चहिके,
जिनि गोढ़नि में गीत भरिया, तिनि ककरनि तां कुर्बानु।
नेण पराए दुख खां छुलकिया,
तिनि मां थोरा आंसू टपकिया,
जे हीरनि जो हारु बणिया, तिनि लुड़कनि तां कुर्बानु।
जिनि कंडनि मां राह बणाया,
गस गस तां गुलजार लगाया,
रास्ते में जे रतु थी पिया, तिनि कदमनि तां कुर्बानु।

(ख) "हिन समाज जी मिल्कियत ?...." साथी खिलण लगो। हिक फिकी निरास खिल, जंहिं मां सारी जिन्दगीअ ज् नाउमेदूं ऐं हसरतूं टपकी पेऊं। "किकी, हिन समाज में त रुपयनि पैसनि खे ई मिल्कियत सडियो वेंदो आहे। इंसान खे मिल्कियत समझण त शायदि बोअ कंहिं किस्म जी समाज ई सेखारींदी!"

उन राति मूंखे निंड ई कीन आई। साथीअ जूं नाउमेद निगाहूं दर्युनि दरनि, ताकनि भित्युनि तां हलंदियूं अचियो अगियां बीहनि। सुबुह जो अखि लगो वेई त डिसां हिकु सख्त तूफान अची रहियो आहे ऐं उन में हिक वड थुड़ वारो, बड़ जो वणु, पाडुनि खां छिकिजी छिकिजी, जमीन खां जोरीअ पंहिंजा पलअ छडाए, धड़ाम करे पट ते किरी पियो। मां कीक करे जागो पियसि।

सुबुह जो स्कूल में वियसि पर पाढ़ण ते मनु न पियो लग। दिल जे तहनि मां हिकु सडु पियो अचे, "साथी! साथी..... ओ साथी।" मोकल खां अग ई बाबा जे घर डांहुं कदम हली विया।